महत्वपूर्ण एवं खास

अकेलेपन की गिरफ्त

अकेलापन हमारे समय की एक कड़वी सचाई है। इससे निपटने के लिए ब्रिटिश सरकार ने तो बाकायदा एक मंत्रालय ही गठित कर लिया है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री टरीजा मे का कहना है कि मैं अपने समाज के लिए इस समस्या का सामना करना चाहती हूं। अकेलेपन की भयावहता की ओर पूरे ब्रिटेन का ध्यान सांसद जो कॉक्स ने खींचा था। उन्होंने एक कमिशन गठित किया था, जिसका मकसद इस समस्या का आकलन करना और इसे दूर करने के उपाय ढूंढना था। इसी आयोग ने अकेलापन मंत्रालय गठित करने का सुझाव दिया था। दुर्भाग्य से 2016 में दक्षिणपंथी उग्रवादियों ने कॉक्स की हत्या कर दी। आंकड़ों के मुताबिक वहां हर दस में एक से ज्यादा लोग इस समस्या से जूझ रहे हैं। 75 साल से ज्यादा उम्र के ज्यादातर लोग वहां अकेले रहते हैं और दो लाख की आबादी ऐसी है जिसे किसी मित्र या रिश्तेदार से बात किए महीना गुजर जाता है। वहां ज्यादातर डॉक्टरों के पास रोजाना एक से पांच मरीज सिर्फ इसीलिए आते हैं क्योंकि वे अकेले होते हैं। यह स्थिति तकरीबन सभी विकसित देशों की है। दुर्भाग्यवश हमारे देश में भी हालात तेजी से वैसे ही होते जा रहे हैं। हम कहने को तो युवा देश हैं, लेकिन अपने यहां बुजुर्ग आबादी तेजी से बढ़ रही है। हाल के वर्षों में 60 साल से ज्यादा उम्र के लोगों की आबादी जनसंख्या वृद्धि की सामान्य दर के मुकाबले दोगुना तेजी से बढ़ी है। फिलहाल इस श्रेणी के लोगों की कुल संख्या 10 करोड़ बताई जाती है, लेकिन अनुमान है कि 2050 तक कुल जनसंख्या का चौथाई हिस्सा बुजुर्ग लोगों का होगा। अकेलेपन से जूझते इन बुजुर्गों की तकलीफ समझने के लिए किसी आंकड़े की जरूरत नहीं है। अपने बाल-बच्चों की जिंदगी से दूर पड़े ये लोग गली के कुत्तों पर प्यार लुटाते नजर आते हैं, हालांकि उनसे इनकी समस्या नहीं सुलझती, असुरक्षा नहीं दूर होती। सबसे बड़ी बात यह है कि अपने देश में अकेलेपन की यह भीषण समस्या बुजुर्गों तक सीमित नहीं है। करियर संवारने की कोशिश में अपने मां-बाप, भाई-बहन से दूर महानगरों में जाकर रहने वाले बहुतेरे युवा भी अकेलेपन से जूझ रहे हैं। इस समस्या के दोतरफा हमले से निपटने की कोशिश अभी से नहीं की गई तो हालात बेकाबू हो सकते हैं।

उपलब्धियां और सपने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले दिनों एक टीवी चैनल को दिए साक्षात्कार में जो कुछ भी कहा, उसमें उनका आत्मविश्वास साफ नजर आया। दरअसल दुनिया की प्रमुख वित्तीय संस्थाओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना विश्वास प्रदर्शित कर केंद्र सरकार की आर्थिक नीति पर अपनी मुहर लगा दी है। हाल में विश्व बैंक ने कहा कि इस साल भारत सबसे तेज विकास वाली अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उसने अपनी 'ग्लोबल इकनॉमिक प्रॉस्पेक्ट्स रिपोर्ट' में 2018-19 में भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर 7.3 प्रतिशत होने का अनुमान जाहिर किया। पिछले महीने ब्रिटेन की कंसल्टेंसी फर्म 'सेंटर फॉर इकनॉमिक ऐंड बिजनेस रिसर्च' (सीईबीआर) ने भी कहा था कि 2018 में भारत दुनिया की टॉप-5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो जाएगा। आईएमएफ और कुछ रेटिंग एजेंसियां भी ऐसा ही संकेत दे चुकी हैं। नोटबंदी और जीएसटी जोखिम भरा कदम था, जिस पर प्रधानमंत्री को विपक्ष द्वारा घेरा भी गया, लेकिन तमाम वित्तीय संस्थाएं मान रही हैं कि इनका असर अब खत्म हो चुका है। इससे पीएम मोदी उत्साहित हैं। उनका यह उत्साह दावोस में विश्व आर्थिक फोरम की सालाना बैठक में जरूर दिखेगा। इसके बारे में प्रधानमंत्री ने अपने इंटरव्यू में कहा कि आज अर्थजगत का ध्यान भारत पर केंद्रित है। भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है और पूरा विश्व इसे मान रहा है।

युवाओं की भागीदारी से जगी उम्मीदें

हाल ही में दिल्ली के प्रगति मैदान में छब्बीसवां पुस्तक मेला खत्म हुआ। मेले के आखिरी दिन रविवार था। उस दिन दो लाख लोग यहां आए। वैसे तो प्रगति मैदान के मेट्रो स्टेशन से प्रगति मैदान के गेट नम्बर दस तक अद्भुत नजारा था। पटरियों पर सैकड़ों किताबें बिक रही थीं। सौ रुपए में तीन किताबें खरीदने वाले तो थे ही बाकी किताबों पर भी जैसे लोग टूट पड़ रहे थे। पत्रकार अरविंद मोहन की टिप्पणी थी कि असली पुस्तक मेला तो यहां लगा है। इस बार अन्य सालों के मुकाबले पुस्तक मेला कैसा रहा, कौन लोग ज्यादा आए और क्या हिन्दी से पाठक जुड़ नहीं रहे हैं? इस पर जिन प्रकाशकों से बात की गई, वे एकमत दिखे कि युवाओं की भागीदारी पुस्तक मेले में बहुत बढ़ी है। राजकमल प्रकाशन के मालिक अशोक महेश्वरी ने कहा कि कुछ साल पहले तक ऐसा लगता था कि युवा पुस्तक नहीं पढ़ते, लेकिन न केवल हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाला युवा बल्कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले लोग न केवल हिन्दी पढ़ रहे हैं बल्कि वे हिन्दी में लिख भी रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस बार हिन्दी प्रकाशक ज्यादा तैयारी और बहुत जोश में थे। पहले हम कार्यक्रमों के लिए अलग से मंच बनाते थे। इस बार तो अधिकांश प्रकाशकों ने ऐसा किया। हर रोज ही स्टाल्स पर कार्यक्रम होते रहे। और सिर्फ प्रकाशक ही नहीं, नए लेखक और पाठक भी जोश में थे। इस बार नए लेखकों की यह शिकायत भी दूर हुई कि बड़े प्रकाशक अकसर पुराने लेखकों को ही छापते रहते हैं, उन्हें जगह नहीं मिलती। राजकमल प्रकाशन ने एक नया प्रयोग भी किया। उन्होंने अपने स्टाल को एक नया रूप दिया और नाम रखा- किताबगंज। यानी कि यह किताबों का कस्बा था। इसे वैसे ही सजाया गया था। कथा साहित्य के अलावा कथेतर विषयों की किताबें भी खूब बिकीं। जैसे कि चम्पारण सत्याग्रह पर पुष्यमित्र की किताब 'जब नील का दाग मिटा' की भारी मांग रही है। सुभाष कुशवाहा की पुस्तक 'अवध का किसान विद्रोह' या रामशरण जोशी की आत्मकथा भी खूब बिकी। यही नहीं, दूर-दूर से पाठक यह पूछते आए कि फलां किताब आ गई क्या। वाणी के अरुण महेश्वरी और अदिति महेश्वरी ने भी माना कि पुस्तक मेले में युवाओं की उपस्थिति अभूतपूर्व थी। युवाओं ने ज्यादा पुस्तकें भी खरीदीं । दिलीप कुमार की आत्मकथा बहुत पसंद की गई। अरुण ने कहा कि उन्होंने मेले के लिए चालीस किताबें तैयार कीं। जयश्री राय का उपन्यास 'मोय रंग दे लाल' बहुत पसंद किया गया। यह वृंदावन की विधवाओं पर लिखा गया है। वाणी ने उपन्यास कुंभ, कविता कुंभ, और बाल साहित्य कुंभ भी किया। अदिति ने कहा कि पिछले दिनों बाजार में हिन्दी को जिस तरह से स्थापित किया गया है, उससे हिन्दी की किताबें खूब बिकीं। इसे पाप कल्चर ने भी बढ़ाया है। हिन्दी को बढ़ाने में शायरी और कविता का भी हाथ है। कुछ दिन पहले जिन पाठकों को हिन्दी से दूर माना जाता था, वे एक तरह से वापस आ गए हैं। वैसे भी किताब अगर अच्छी हो तो पाठक को जुड़ने में समय नहीं लगता। हिन्दी में एक तरह से आइकन्स की कमी रही है। उनकी बहुत जरूरत है। इन दिनों हाल यह है कि ग्यारह-बारह साल के बाद अठारह-उन्नीस साल की उम्र में युवा हिन्दी की तरफ वापस आता है। इसलिए इस वर्ग में पैठ बनाने के लिए हमें हिन्दी के ब्रांड एम्बेसडर चाहिए। जैसे कि कुमार विश्वास ने जान इलिया को हिन्दी के पाठकों तक पहुंचाया। युवाओं की भाषा में समझाया। मनीष गुप्ता ने वीडियो आर्काइव प्रोजेक्ट बनाया। मनोज वाजपेयी रश्मिरथी पढ़ते हैं। इन्हें पढ़- सुनकर युवा पुस्तकों की तरफ खिंचे चले आते हैं। आज की हिन्दी स्वस्थ और खिलखिलाती हिन्दी है। वह किसी के बोझ तले दबी हिन्दी नहीं है। सामयिक प्रकाशन के महेश भारद्वाज ने भी कहा कि मध्य वर्ग और युवाओं की भागीदारी पुस्तक मेले में बहुत बढ़ी है। विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ने वाले, देशभर के शोध छात्र मेले में खिंचे चले आते हैं। यह मेला पुस्तक संस्कृति को बढ़ाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है। इसमें लेखक, पाठक, प्रकाशक सभी शामिल होते हैं। कई बार पाठक किताबों की कीमतों को लेकर परेशान होते हैं। वे महंगे से महंगे घरेलू उत्पाद जैसे कि टीवी, फ्रिज कार, मोबाइल खरीद सकते हैं मगर किताबें सस्ती ही चाहते हैं। जबकि बहुराष्ट्रीय निगमों में काम करने वाले युवाओं को अगर किताब पसंद आए तो वे कीमत का पृष्ठ नहीं देखते। एक तरफ जहां स्त्री और दलित विमर्श की किताबों की भारी मांग है, वहीं उपन्यास भी अपनी जगह बनाए हुए हैं। ज्ञान प्राप्त करने वाले लोग ही यहां आते हैं। लक्ष्मी के पुजारी यहां नहीं आते। पुस्तक मेला और उसमें बिकने वाली किताबें एक बौद्धिक प्रयोजन है। साहित्य-संस्कृति को पूंजी की नजर से नहीं देखा जाना चाहिए। राजपाल एंड संस की मीरा जौहरी ने खुश होते हुए कहा कि हर पुस्तक मेला अपने साथ नई किताबें लाता है, वही इसकी पहचान भी है। कुछ किताबों की बहुत चर्चा होती है। कुछ नए प्रकाशक भी आते हैं, जो पुस्तक मेले को एक नया रंग देते हैं। मीरा का कहना है कि आज युवा पाठकों के रूप में आ रहे हैं ।वे स्मार्ट फोन, इंटरनेट दक्ष हैं। इंटरनेट ने पाठकों और पुस्तकों के बीच दूरी कम की है।

अपने लेखक को पहचानिए

बहुत दिनों के बाद हिंदी क्षेत्र से एक अच्छी खबर आयी है. फेसबुक पर इलाहाबाद के धीरेंद्र नाथ लिखते हैं : 'अभी सोबन्था से लौटा हूं! मैं आज गुरुवर दूधनाथ सिंह जी के पैतृक गांव, अपनी प्रिया एवं बच्चों के साथ गया था. सर के छोटे भाई श्री रामअधार सिंह जी से बातचीत हुई. उनके बेटों और नातियों से मिला. सर के विषय में देर तक चर्चा हुई. निःसंदेह, अत्यंत सरल और मानवीय गरिमा से युक्त हैं, उनके परिजन. ग्रामप्रधान ने मूर्ति लगाने की घोषणा की है. बलिया जनपद में फेफना-बक्सर रोड पर लबे-सड़क है सोबन्था गांव. बलिया की भूमि से (हालांकि सिर्फ बलिया के नहीं) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और अमरकांत जी की कड़ी में दूधनाथ जी रचनात्मक लेखन में तीसरा महत्त्वपूर्ण नाम हैं (भैरव दादा तो हिंदी के विचार स्तंभ हैं) और चौथा नाम केदार नाथ सिंह का है..'इस पोस्ट में अच्छी खबर यह है कि दूधनाथ सिंह, जिनकी मृत्यु 81 वर्ष की आयु में इसी हफ्ते हुई है, के गांव सोबन्था ग्राम प्रधान ने उनकी मूर्ति लगाने का निर्णय किया है. यह एक विरल घटना है. हिंदी में बहुत कम लेखकों की याद में मूर्ति स्थापित की गयी है. यह सौभाग्य प्रेमचंद, निराला, रामवृक्ष बेनीपुरी, रेणु आदि गिने-चुने लेखकों को मिला है. दूधनाथ सिंह बलिया के थे. मुझे नहीं पता कि बलिया में हजारी प्रसाद द्विवेदी और अमरकांत की मूर्ति लगी है या नहीं. मेरा अनुमान है कि नहीं ही लगी होगी, क्योंकि इसकी परंपरा नहीं रही है. जिन लेखकों की मूर्तियां बनी भी हैं, उनकी हालत हर दृष्टि से चिंतनीय है. इससे भी पता चलता है कि हिंदी समाज को अपने लेखकों से कितना लगाव है. दूधनाथ सिंह के गांव के प्रधान द्वारा की जा रही यह पहल निश्चय ही प्रशंसनीय है. कुछ समय पहले दिल्ली में राजेंद्र यादव का निधन हुआ था. अज्ञेय जी की मृत्यु भी दिल्ली में हुई थी. हाल ही में कुंवर नारायण जी का दिल्ली में देहांत हुआ. पर जिस इलाके में वे रहते हैं, वहां उनकी मूर्ति लगने की न कोई योजना है और न संभावना. साहित्य अकादमी, हिंदी अकादमी, हिंदी भवन में भी ऐसी कोई योजना नहीं है. ये तीनों ही लेखक दूधनाथ सिंह से ज्यादा प्रसिद्ध हैं. इसलिए जिज्ञासा होती है कि दूधनाथ सिंह को यह सौभाग्य कैसे प्राप्त हुआ होगा!

राष्ट्रीयता की अवधारणा

भारत की राजनैतिक प्रभु सत्ता एक सच्चाई है, जो औपचारिक और विधिक तौर पर देश को राष्ट्र के रूप में स्थापित करती है. पर वह भारतीय समाज के जीवन का हिस्सा है और अनुभव का विषय भी है. उसकी एक सांस्कृतिक और मानसिक उपस्थिति भी है, जो काल का अतिक्रमण करती है. हम व्यवहार में 'देश' और 'राष्ट्र' शब्द का उपयोग सामूहिक या सामुदायिक आत्म छवि को व्यक्त करने के लिए करते हैं. देश स्थान का बोध कराता है पर साथ ही दिशा का भी संकेत करता है. राष्ट्र एक संगठित सामाजिक इकाई को बताता है, जो उसी तरह की दूसरी इकाई से अलग होती है और उसके सदस्य अपने को भिन्न समूह वाला मानने लगते हैं. हमलोग अपनी सामाजिक दुनिया को 'हम' और 'तुम' दो श्रेणियों में बांटने के लिए कई कसौटियों को अपनाते हुए समूहों का निर्माण करते हैं. 'नेशन' भी इसी तरह का एक समूह है पर उसका स्वभाव बड़ा प्रखर है. याद करें हजारों-लाखों लोगों ने बीसवीं सदी में हुए युद्धों में अपने-अपने देश के लिए लड़ते हुए अपनी जानें गंवाई हैं और यह सिलसिला अभी भी जारी है. समूह या समुदाय निर्माण की विवशता या है कि उसमें अलग और एक दूसरे के विरु द्ध मानवता को खड़ा करने की प्रवृत्ति सहज रूप में अन्तर्निहित है.आज के अर्थ में नेशन (राष्ट्र!) लम्बे अंतराल में घटित होने वाली अनेक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का परिणाम होता है. हर देश की अतीत की एक समझ होती है, जो कथाओं और मिथकों द्वारा अभिव्यक्त होती है. ऐतिहासिक रूप से सच हों या न हों ये स्मृतियां वर्तमान के उस आत्म-बोध को रचने में सहायक होती हैं, जो एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से अलग करती हैं. हम सभी परिवार और विद्यालय जैसी संस्थाओं में पलते-बढ़ते हैं ही वह देश की भाषा, रीति-रिवाज और कानून को भी सीखता है. वह परम्पराओं को आत्मसात करता चलता है और उसका भागीदार बनता है. इसी से सामूहिक आत्म-बोध निर्मित होता है, जो राष्ट्र का आधार होता है.

क्यों रक्तरंजित हो रहे स्कूलों के कैंपस

कभी विश्व गुरु के रुप में पहचाने जाने वाले भारत का भविष्य क्या नैतिकता से परे और हिंसा तथा अराजकता की चरमसीमा को छूने वाला होगा ? देश का भविष्य माने जाने वाले बच्चों के शिक्षा के मंदिर क्या इस दिशा में गंभीर हैं ? वर्तमान में डिग्री ब्रांड शिक्षा प्रणाली नौनिहालों को नैतिकता का मंत्र देने में नाकाम साबित हो रही है । क्या शिक्षा बच्चों को आतंकित कर उन्हें हिंसक कदम उठाने मजबूर कर रही है । यह स्थिति देश और पूरे समाज के लिए जितनी चिंताजनक है उससे कहीं अधिक इसके भयावह होने के आसार हैं । लखनऊ के ब्राईटलैंड स्कूल में सातवीं की छात्रा के एक छह वर्षीय छात्र पर जानलेवा हमले की लोमहर्षक वारदात ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है । 13 वर्षीय इस छात्रा ने क्लास वन के ऋतिक नामक बच्चे को चाकू से गोदकर मरा समझकर छोड़ दिया । बच्चे के चिल्लाने पर शिक्षकों ने उसे अस्पताल पहुंचाया । छात्रा ने बच्चे की हत्या महज इसलिए करना चाहा क्योंकि उसकी मौत से स्कूल में एक दिन की छुट्टी मिल जाएगी । बच्चे ने भी पुलिस को बताया कि दीदी मारते हुए बोल रही थी कि तुम मरोगे नहीं तो हमें स्कूल से छुट्टी कैसे मिलेगी । इसके दूसरे दिन हरियाणा के यमुनानगर स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल से निष्कासित बारहवीं के छात्र ने भी स्कूल में ही प्रिंसिपल रितू छाबड़ा की हत्या कर दी थी । इसके पूर्व गुरुग्राम के रेयान इंटरनेशनल स्कूल में सात वर्षीय छात्र प्रद्युम्न ठाकुर की निर्मम हत्या स्कूल के ही 11 के एक छात्र ने कर दी थी । हत्या करने वाले छात्र ने पुलिस को बताया कि स्कूल में छुट्टी कराने और टर्म एक्जाम को टालने के लिए यह जघन्य वारदात की । देश में पिछले कुछ समय से इस तरह की बढ़ती घटनाएं देश के लिए गहन चिंता का विषय होना चाहिए ।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं :

1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सूनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गौरैया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का टुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संस्था 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.

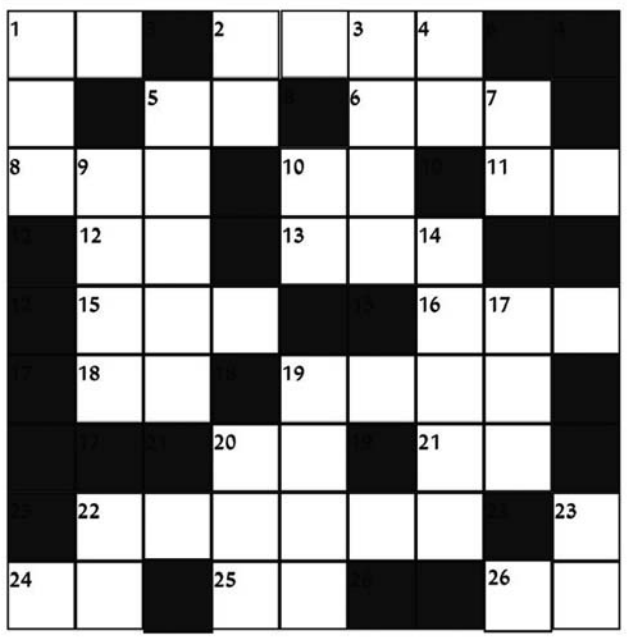

पूर्व का हल

स्वा	द		सा	म	ना		कै	दी
व		ख	ल	ना	य	क		वा
लं	प	ट		ना	क	क	ट	ना
बी		प				ड़ी		प
	अ	ट	प	टा			शा	न
स	ह		यो			र	ति	
ह	म		द	र	ब	द	र	
म	क	र		सी	ल			
त		क्षा		द	वा	खा	ना	

सू-दोकू

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पूर्व का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

राशिफल

मेष- किसी अधिकारी से वाद-विवाद होने पर कानूनी पक्ष नया मोड़ ले सकता है। सायंकाल के समय योजनापूर्ति से लाभ होगा।

वृष- आज जमीन-जायदाद से संबंधित विवाद में हानि हो सकती है। भौतिक सुख के साधनों की वृद्धि होगी।

मिथुन- आज नए व्यापार के लिए नई योजनाएं बनेंगी। ऋण भार में कमी होगी। संतान पक्ष का पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क- नयी प्रॉपर्टी खरीदने की सम्भावना है। आर्थिक समृद्धि तभी संभव है जब आप जीवन में थोड़ा धैर्य और सूझ बूझ से निवेश करें।

सिंह- आज पुराने मित्रों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। बुद्धि विवेक से लिए गए निर्णय लाभप्रद रहेंगे।

कन्या- आपके खर्चे कम हो जाने से आपकी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। अच्छे वाहन का सुख प्राप्त होगा।

तुला- धन प्राप्ति से कोष वृद्धि होगी। नौकरी वाले जातकों के अधिकारों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक- नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन और सफलता मिलने की उम्मीद है।

धनु- नए व्यापार के लिए नई योजनाएं बनेंगी जो आगे चलकर धन लाभ कराएंगी।

मकर- कार्यक्षेत्र में आज जबरदस्त उछाल आपको दिखाई पड़ेगा।

कुंभ- आपके पुराने रूके हुए कार्य कुछ झंझटों व खर्चा करने के बाद पूर्ण हो जाएंगे। करेंगे।

मीन- व्यापार की दृष्टि से आज का दिन अनुकूल रहेगा। कानूनी विवाद में सफलता, स्थान परिवर्तन की योजना सफल हो सकती है।